अभी इश्क के इम्तिहां और भी हैं...

आईएएस टॉपर गौरव अग्रवाल के नाम खुला पत्र

प्रिय गौरव अग्रवाल,

हॉन्गकांग की लाइफ स्टाइल और कॉरपोरेट सेक्टर का आकर्षक पैकेज ठुकरा कर, देश सेवा का जज्बा लिए तुम भारत लौटे और वह मुकाम हासिल करने में सफल हो गए जिसका तुमने ख्वाब देखा था। तुम्हें बधाई।

आसान नहीं होता आईएएस परीक्षा में सफल होना और तुम केवल सफल ही नहीं हुए, इस परीक्षा के सर्वोच्च शिखर पर आसीन भी हो गए। मैं जब न्यूज चैनल पर तुम्हारी अभूतपूर्व सफलता का समाचार देख रहा था, देश के लिए कुछ कर गुजरने की आशा भरी तमन्ना को सुन रहा था, तब मुझे मेरे एक मित्र जो कभी आईएएस अधिकारी रहे थे, का वह कथन याद आ गया जो निराशा से परिपूर्ण था। सेवानिवृत्ति तिथि को वह मुझसे मिलने आए थे और उन्होंने दुखी होकर कहा था कि वह अपने पुत्र को कभी आईएएस अधिकारी नहीं बनाएंगे। वह अपने सेवाकाल में ईमानदार और कर्मठ अधिकारी के रूप में चर्चित रहे थे किन्तु उन्हें कभी प्राइज पोस्टिंग नहीं मिली थी।

तुमने भी यदाकदा यह मुहावरा सुना होगा कि अमुक अधिकारी का अमुक शासक के साथ छत्तीस का आंकड़ा है। मैं कई बार यह सोचने के लिए विवश हुआ हूं कि प्रजातंत्र में आखिर क्यों सूर्य की तरह प्रखरता रखने वाले अधिकारियों की उपेक्षा की जाती है और जुगनुओं जैसे महत्वहीन अधिकारियों की पूछ होती है। लोकतंत्र क्यों फ्यूज बल्बों का समारोह बन कर रह जाता है और रोशनी को क्यों शहर से बाहर निकलना पड़ता है।

एक दल की सरकार जब सत्ता पर काबिज होती है तो चहेते अधिकारी सचिवालय के प्रमुख पदों पर स्थापित कर दिए जाते हैं और वे अधिकारी जो दूसरे दल की सरकार के करीबी थे, बर्फ में लगा दिए जाते हैं। इस प्रक्रिया को अपनाने में योग्यता मापदण्ड नहीं होती है। अब जब तुमने जन-सेवा का व्रत ले ही लिया है और लोकतंत्र के प्रवेश द्वार पर दस्तक दे ही दी है तो करना है। एक अभ्यास तुम्हें और करना है और वह है उड़ते पक्षी के पंख गिनने का। तुम्हारा बॉस क्या चाहता है, तुम्हें इसका सदैव ध्यान रखना होगा। अगर बॉस किसी विषय पर तुम्हारी राय चाहता है तो तुम्हें यह देखना होगा कि बॉस का हित कैसी राय देने में सधता है। तुम्हें कुछ बातों का और रियाज करना है। कभी-कभी आत्मप्रशंसा करने की आदत डालनी है। बॉस की नजरों में अपने साथी अधिकारियों को गिराने के लिए तुम्हें परनिन्दा का सहारा भी लेना पड़ सकता है। कभी दुष्चर्चाओं की राजनीति भी तुम्हें करनी पड़ सकती है। तुमसे प्रतिस्पर्धा रखने वाले हर उस शख्स को सीधा करने का एक सूत्र तुम्हें बताता हूं। तुम्हें अधिक कुछ नहीं करना होगा बस अपने व्यक्तित्व को थोड़ा तिरछा करना होगा।अब से तुम्हारा समय तुम्हारा नहीं है। दैनन्दिन क्रियाकलापों के अतिरिक्त जो भी समय बचता है, तुम्हारे बॉस का है। तुम्हें परिवारजनों से कह देना है कि वे अपना ध्यान खुद रखें क्योंकि उनके लिए तुम्हारे पास समय नहीं है।

तुम उस प्रशासनिक मन्दिर के पुजारी हो जिसमें तुम्हारे बॉस की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है और तुम्हें अनवरत उस प्रतिमा की स्तुति में लीन रहना है। शासन तंत्र के नजदीक पहुंचने के लिए योग्य होना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना 'नवनीत लेपन' में पारंगत होना। शासक की प्रशंसा करने की कला जिस अधिकारी को आती है वह अपरिहार्य हो जाता है उसकी हर जगह पूछ होती है। वह हर समय डिमाण्ड में रहता है। अधिकारी कितना भी वरिष्ठ अथवा योग्य क्यों न हो, वह सत्तासुख तब ही भोग सकता है, जब उसमें चुम्बक के समक्ष लोहे का बुरादा बनने की कला कूट-कूट कर भरी हो। तुम्हें भी आत्मनिरीक्षण करना है। अपने भीतर से उन गुणों को बाहर निकालना है जो तुम्हें शासक का चहेता बना सकें। अब तक रीढ़ की हड्डी तुम्हें सीधा खड़ा करने में सहयोग करती रही है लेकिन अब तुम उस दौर में पहुंच गए

अभी से सतर्क होना होगा। कल्पवृक्षों की परिक्रमा करने में सिद्धहस्त होना होगा, छोटे-छोटे दरवाजों से झुक कर निकलना होगा। तुम्हें यह जानना होगा कि जिस घर की छत घास-फूस की हो और द्वार लकड़ी के, वहां देहरी पर दीप नहीं जलाए जाते। जिस नेतृत्व के अधीन तुम्हें पदस्थापित किया जाए, उसके प्रत्येक विचार से तुम्हें सहमत ही होना है। तुम्हें यह याद रखना है कि अब से तुम्हारा न तो कोई निजी विचार है और न कोई निजी मत। जो योग्यता आईएएस परीक्षा टॉप करने के कार्य में आई थी, अब उसका उपयोग न किया जाना ही श्रेयस्कर होगा। क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि तुमसे ऊपर बैठा व्यक्ति तुमसे अधिक योग्य हो। तुम अब सिर्फ 'यसमेन' हो और इसी भूमिका को निभाना ही तुम्हें सफलता की ओर अग्रसर कर सकता है। तुम्हें अब अपने व्यक्तित्व को पानी की तरह बनाना है। जिस बर्तन में तुम्हें डाला जाए, तुम्हें उसी का आकार ग्रहण हो जहां उन लोगों के ही कद ऊंचे होते हैं जो रीढ़ की हड्डी बाहर रख शासन द्वार में प्रवेश करते हैं। सूरजमुखी फूल की यह विशेषता होती है कि जिधर जिधर सूर्य जाता है, वह भी उसी ओर अपनी गर्दन घुमाता रहता है, वह सूर्य के साथ ही उठता है और झुकता है। तुम्हें भी अपने शीश को सूरजमुखी फूल की तरह एडजस्टेबल बनाना है। यह सभी जानते हैं कि जंगल में सबसे पहले वे ही पेड़ कटते हैं जो सीधे खड़े होते हैं। जो झुके हुए या अष्टावक्री वृक्ष होते हैं वे कभी नहीं कटते। तुम्हें भी कुटिलता को आत्मसात करना है, अपने व्यक्तित्व को ऐसा बनाना है कि शासन तंत्र की आरी तुम्हारा अहित न कर सके। और अधिक क्या लिखूं। तुम खुद ही समझदार हो। तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं।

तुम्हारा शुभेच्छु,

शिवकुमार शर्मा

पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाईकोर्ट